वर्तमान में साहित्य की चुनौतियाँ

संपादक

डॉ. आशा रानी

Scanned by CamScanner

सम्मान्य भैया, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय सादर।

वर्तमान में साहित्य की चुनौतियाँ

संरक्षक
प्रो. कपिल देव मिश्र
कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

दिशा-निर्देश
प्रो. कमलेश मिश्र
कुलसचिव

प्रो. भरत तिवारी
अधिष्ठाता कला संकाय

प्रो. धीरेन्द्र पाठक
विभागाध्यक्ष हिंदी

मार्गदर्शन
आचार्य (डॉ.) हरिशंकर दुबे

आयोजक समिति
प्रो. अरूण कुमार मिश्र
प्रो. अरूण शुक्ल

संपादक
डॉ. आशा रानी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 28 –29 मई, 2019
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय मानव संसाधन विकास मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग, नई दिल्ली एवं हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, जबलपुर
के आयोजन प्रसंग पर प्रकाशित 2019

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय	नाम	पेज न.
1	वर्तमान समय में साहित्य की चुनौतियाँ और समाधान	प्रो. कपिल देव मिश्र	1–3
2	साहित्य की चुनौतियाँ नहीं, साहित्य का सामर्थ्य	श्री श्रीधर पराड़कर	4–5
3	साहित्य में राजनीति की घुसपैठ : एक चुनौती	श्री गिरीश पंकज	6–9
4	कौन सी पितृसत्ता ?	नीरजा माधव	10–12
5	वर्तमान साहित्य एवं संस्कृति के सामंजस्य की चुनौतियाँ	प्रो. बीना शर्मा	13–19
6	भारतीय साहित्य में लोकतत्त्व	प्रो. रेखा रॉय	20–24
7	वर्तमान साहित्य में सामाजिक समरसता की चुनौती	प्रो. आर.एस. सर्राजु	25–28
8	साहित्यिक चुनौतियाँ : वर्तमान परिदृश्य	प्रो. खेमसिंह डहेरिया	29–33
9	साहित्य लेखन की चुनौतियाँ	प्रो. अरुण कुमार मिश्र	34–35
10	वर्तमान समय में साहित्य की चुनौतियाँ	प्रो. स्मृति शुक्ल	36–38
11	साहित्य और साहित्यकार की चुनौतियाँ	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	39–42
12	चुनौतियों के व्यूह जाल को तोड़ती नारी	डॉ. तनूजा चौधरी	43–44
13	साहित्य की वर्तमान चुनौतियाँ	डॉ. आशा रानी	45–48
14	वर्तमान में साहित्य के अपने अस्तित्व की चुनौती	डॉ. प्रीति प्रवीण खरे	49–53
15	वर्तमान साहित्य में मूल्यों के संरक्षण की चुनौतियाँ	डॉ. अमिता दुबे	54–57
16	कश्मीर और कश्मीरी समाज की चुनौतियां	डॉ. बीना बुदकी	58–60
17	वर्तमान साहित्य और संस्कृति में सामन्जस्य की चुनौतियाँ	डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय	61–65
18	वर्तमान साहित्य में राजनीतिक घुसपैठ की चुनौतियाँ	डॉ. सुनील शर्मा	66–67
19	संवैधानिक साहित्य की चुनौतियाँ	डॉ. सुजाता श्रीवास्तव	68–71
20	नारी अस्मिता का दस्तावेज : निराला का साहित्य	डॉ. माधुरी गर्ग	72–74
21	सामाजिक समरसता की चुनौती	डॉ. बिहारी लाल द्विवेदी	75–80
22	राष्ट्र – राष्ट्रगान और वर्तमान चुनौतियाँ	डॉ. सहदेव प्रसाद गुप्ता	81–84
23	नागार्जुन के साहित्य में लोक तत्त्व	डॉ. बीना शर्मा	85–89
24	वर्तमान साहित्य में मूल्य–संरक्षण : एक चुनौती	डॉ. सपना चौहान	90–92
25	साहित्य में मूल्यों के संरक्षण की चुनौती	डॉ. अरुण कुमार मिश्र	93–96
26	वर्तमान में साहित्यकारों के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. लखविन्दर कौर	97–100
27	कबीर का समाज–चिंतन और उनकी चुनौतियाँ	डॉ. विनय कुमार शुक्ल	101–103
28	नारी विमर्श का स्वरूप (सामाजिक साहित्यिक परिपेक्ष्य में)	डॉ. योगिता रावते	104–106
29	वर्तमान साहित्य की चुनौतियाँ (कैमरा व कलम की भाषा के विशेष संदर्भ में)	डॉ. अभिलाषा शुक्ला	107–109
30	वर्तमान साहित्य में सामाजिक समरसता की चुनौतियाँ	डॉ. शान्त कुमार चतुर्वेदी	110–112
31	पारिवारिक चुनौतियों की झांकी : साहित्य	डॉ. ब्रजेश श्रीवास्तव	113–115
32	वर्तमान साहित्य में स्त्री विमर्श की चुनौतियाँ	डॉ. प्रमिला मिश्रा	116–118
33	हिंदी साहित्य में व्यंग्य साहित्य की चुनौतियाँ (राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में)	डॉ. श्रीमती शशि जेकब	119–124
34	स्त्री–जीवन : चुनौतियां एवं संघर्ष	डॉ. मुकेश कुमारी	125–127
35	कविता में कथ्य–शिल्प का सामर्थ्य	डॉ. राजेश्वरी मरकाम	128–130
36	वर्तमान में साहित्य की चुनौतियाँ	पियूष कुमार	131–136
37	वर्तमान साहित्य में सामाजिक समरसता की चुनौतियाँ	आलोक कुमार तिवारी	137–139

Scanned by CamScanner

वर्तमान साहित्य और संस्कृति में सामन्जस्य की चुनौतियाँ

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय
श्रीसूर्यम, कुलपति निवास के पास, कोर्ट रोड, 10 सिविल लाइन सागर म.प्र.

सामन्जस्य अर्थात् तालमेल। दोनों पक्षों में तालमेल बिठाना। यहाँ दोनो पक्षों से तात्पर्य साहित्य जो वर्तमान में लिखा जा रहा है वह तथा संस्कृति से है। वर्तमान साहित्य वर्तमान समाज को प्रतिबिंबित करता हो तथा उस संस्कृति को भी,समाज जिसे धारण करता है। भारतीय समाज भारतीय संस्कृति को ही आत्मसात करके उसी के अनुरूप जीवन जीता हो, यही उसके अस्तित्व और अस्मिता की पहचान होगी तथा इसी तरह संस्कृति की रक्षा होती है और उसका गौरव बढ़ता है।साहित्यकार इस स्थिति और ऐसे समाज को अपने साहित्य में दर्ज करता है तो इसमें चुनौती की क्या बात है? अनुकूल परिस्थितियों में चुनौती का प्रश्न नहीं उठता। यह प्रश्न तब उठता है जब परिस्थितियाँ प्रतिकूल हों। वर्तमान में साहित्यकारों के लिए साहित्य और संस्कृति मे सामन्जस्य बिठाना इसलिए चुनौती बन गया है क्योंकि भारतीय समाज पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर उसी के अनुसार जीवन जी रहा है। उसका दृष्टिकोण पाश्चात्य विचार धारा का पोषक है। एकल परिवार, हर व्यक्ति की निजता, आत्मकेन्द्रित होना, समलैंगिकता, लिवइन जैसी अमंगलकारी नकारात्मक प्रवृत्तियों को सराहना और अपनाना भारतीय समाज में आधुनिक होने का पर्याय हो गया है। साहित्यकारों के लिए चुनौती यह है कि वे अपने साहित्य में इन प्रवृत्तियों को इस तरह प्रस्तुत करें कि इनका नकारात्मक परिणाम प्रभावशाली ढंग से समाज के सामने आए तथा भारतीय संस्कृति की महत्ता सुदृढ़ हो। स्वतंत्रता प्राप्ति के दौर में यह आसान था। रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है–"भारत यूरोप के साथ आने वाले धर्म से नही डरा, बल्कि भय उसे यूरोप के विज्ञान को देखकर हुआ,उसकी बुद्धिवादिता,साहस और कर्मठता से हुआ। अतएव भारत में नवोत्थान का जो आंदोलन उठा, उसका लक्ष्य अपने धर्म, अपनी परम्परा और अपने विश्वासों का त्याग नहीं, प्रत्युत यूरोप की विशिष्टताओं के साथ उनका सामंजस्य बिठाना था।" अर्थात् भारतीय समाज यूरोपीय संस्कृति से केवल उन मंगल कारी प्रवृत्तियों को ग्रहण कर रहा था जिससे कुरीतियाँ, रूढ़ियाँ, अमानवीय परम्पराएँ, अशिक्षा असमानताएँ आदि दूर हों तथा भारतीय संस्कृति और पुष्ट हो,सबल और समृद्ध हो। अतः यहाँ साहित्यकारों के लिए कोई चुनौती नहीं थी।

अब साहित्यकारों के लिए चुनौती है क्योंकि समाज का आचरण दोहरा है और साहित्यकार स्वयं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से अछूता नहीं है। वह खुलकर इसका पक्ष नहीं लेता ताकि भारतीय समाज में निंदा का कारण न बने, और विपक्ष में भी नहीं बोलता ताकि आधुनिक समाज में वह परम्परागत लीक पर चलने वाला न माना जाए।इसलिए द्वन्द्व है। अब परिस्थितियाँ विपरीत हैं। उपन्यासकार रमेश दवे अपने उपन्यास 'हरा आकाश' में लिव इन रिलेशनशिप में रहने वाली नायिका मानवी तथा उसकी दोनों बहनो शाम्भवी और गौरवी को परोक्ष रूप से सहयोग देते प्रतीत होते हैं, इसकी पुष्टि हेतु संवाद देखें–" शाम्भवी अपने पिता से कहती है–अच्छा पापा, आप यह तो जानते ही हैं कि हम तीनों बहनें आजकल लिव इन रिलेशन में हैं।यह इतना अच्छा है तो शादी की क्या जरूरत है पापा?" जवाब में कर्नल और उनके मित्र कुरैशी सपत्नीक बेटियों को भारतीयता का ज्ञान देते हुए कहते हैं कि–

"भारतीय समाज लिव–इन–रिलेशन को नाजायज मानता है। यह शादी का विकल्प नहीं है। हमारे अपने संस्कार, लोकाचार, लोक–विश्वास और लोक–आदर्श हैं, नैतिक–सामाजिक मूल्य हैं। इन मूल्यों को बचाना हमारा फर्ज है।" इस ज्ञान के बावजूद रमेश दवे कथा के इस प्रश्न को अनुत्तरित छोड देते हैं कि पाठक स्वयं निर्णय करें कि इन बेटियों को क्या करना चाहिए उन्हें लिवइन में रहना चाहिए या विवाह करना चाहिए। लेखक की यह पलायनवादी प्रवृत्ति उन्हें लिवइन के पक्ष में खडा करती है क्योंकि कुछ न कहना भी 'हाँ' ही माना जाता है। यह साहित्यकार का भी चुनौती से पलायन है।

भूमण्डलीकरण केवल वस्तुओं के, व्यापार के प्रसार तक होता तो ठीक था किन्तु यह संस्कृति पर भी आक्रमण कर रहा है,जो भारतीय परिवेश में तो हानिकारक सिद्ध हुआ है। इस धारा के विपरीत तैरना चुनौती है। भेड–चाल से अलग अपनी एक विशिष्ट, सार्थकता की ओर ले जाने वाली राह का चयन कर उस पर चलना चुनौती है। इसी तरह विपरीत धारा के सम्मुख अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाए रखना भी चुनौती है।

Scanned by CamScanner

या (प्रक्रिया) रानी दुर्गावती विवि., जबलपुर
नुसकल्पा, जीवनी,2. कुछ मन की, कविता–संग्रह, 3. ये तो कहना ही था, कहानी–संग्रह
ोगल हिंदी, 5. हिंदी की बोलियों में बोध गम्यता, 6. समाज के सर्जक : डॉ. अंबेडकर,
ोध प्रविधि और आधुनिक संदर्भ, 8. हिंदी भाषा और भाषीय संरचना

नन पीठ, उज्जैन द्वारा कहानी कारका सम्मान सन् 2010
प्रेम और सम्मान को समर्पित नई दुनिया दैनिक अखबार द्वारा 'ओ माँ' का सम्मान सन् 2011
ाहित्य संस्था, कर्नाटक द्वारा 'ज्ञानोदय साहित्य भूषण सम्मान' 2014
रतीय हिंदी सेवा समिति, मध्य प्रदेश द्वारा 'साहित्य शिरोमणि' सम्मान 2015।
जबलपुर द्वारा 'सशक्त महिला सम्मान' व अन्यानेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मान 2015।
लेखिका संघ की ओर से कहानी संग्रह 'ये तो कहना ही था' पर 'श्रीमती गिरिजावती तिवारी स्मृति सम्मान' 2016
ा हिंदी विद्यापीठ, गांधी नगर ईशीपुर, जिला भागलपुर बिहार द्वारा डी.लिट् की मानद् उपाधि 'विद्यासागर'
दिसंबर, 2016 को प्रदान किया गया।
ति सावित्रीबाई फूले शैक्षणिक राष्ट्रीय सम्मान, नागपुर मार्च 2017
सर्वोदय–पर्यावरण संवर्धन' सम्मान, कुरुक्षेत्र, मार्च 2017
ान, सृजन साधिका, मई 2017 जबलपुर।
ट' सम्मान–विश्व हिंदी सम्मेलन, इलाहाबाद द्वारा 11 जून, 2017
शास्त्री स्मृति सम्मान' अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान– 2017 बदायु
ान, जबलपुर 07 मई, 2017
मणि अलंकरण, जबलपुर 19 नवंबर, 2017
ाई फूले सम्मान' 2018, जबलपुर
राज्यपाल श्रीकेशरीनाथ त्रिपाठी द्वारा राजभवन में पुरस्कृत एवं शारिका–शारदा सम्मान, 28 अप्रैल 2018
य संगोष्ठी दुबई में आचार्य क्षेमेन्द्र शारदा साहित्य सम्मान, 09 अगस्त 2018
लन, पटियाला में काव्य गौरव सम्मान, 01 सितंबर, 2018
साहित्य परिषद्, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ द्वारा हिंदी दिवस 14 सितंबर 2018 को महादेवी वर्मा स्मृति सम्मान ।
ी साहित्य शारदा सम्मान" 22–24 अक्टूबर, 2018 को हिंदी कश्मीरी संगम एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली द्वारा
राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मान प्राप्त।
कल है' प्रोत्साहन सम्मान, पूनम संत महिला एवं विकास समिति, इलाहाबाद द्वारा सम्मान प्राप्त 25 नवंबर, 2018।
गम संस्थान, नई दिल्ली द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर 08/03/2019 को 'साहित्य ज्योति सम्मान' प्रदान किया गया।
ारण– ज्ञानवाणी जबलपुर द्वारा साहित्यिक एवं सामाजिक प्रसार व्याख्यान प्रसारित।
, साक्षात्कार, शोध–दृष्टि, विमल–विमर्श, शोध–समय, इंडियन पीसटाइम्स, अनभै, साहित्य शिखर, बहती गंगा, प्राची, सृजक,
रस्वती एवं दैनिक भास्कर, नई दुनिया, झांसी मेल, पत्रिका एवं जागृति सहारा आदि पत्र–पत्रिकाओं में 100 से अधिक शोध पत्र
–कविता एवं लेखों का निरंतर प्रकाशन।
कार्यों में सक्रिय भूमिका।
हिंदी परिषद्, इलाहाबाद की सदस्य
लेखिका संघ की सदस्य।
समिति, मध्यप्रदेश की सदस्य।
एस, दिल्ली की महिला शाखा की राष्ट्रीय अध्यक्ष।
, जबलपुर की सदस्य।

दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, जबलपुर।
कार्य हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।

by :- SRF Research Journal & Book Publication House

ISBN 978-93-88336-10-9

9 789388 336109

nal & National Research Journal & Publication House
Research Papers / Chapter / Books / Review / Articles
ournal ISSN (Impact Factor & Referred Journal) & ISBN (Book)
Help for Synopsis, M-Phil, Ph.D, Thesis Work, Review Project Work,
Typing, Designing, Printing Work, Survey, Data Collection,
Conference etc .

Website : www.srfresearchjournal.com

Scanned by CamScanner